सुशीला टाकभौरे की चार कविताएं

(1)

स्त्री

एक स्त्री
जब भी कुछ कोशिश करती है

लिखने की बोलने की समझने की

सदा भयभीत सी रहती है

मानो पहरेदारी करता हुआ

कोई सिर पर सवार हो

पहरेदार

जैसे एक मजदूर औरत के लिए

ठेकेदार

या खरीदी संपत्ति के लिए

चौकीदार

वह सोचती है लिखते समय कलम को झुकाकर

बोलते समय बात को संभाल ले

और समझने के लिए

सबके दृष्टिकोण से देखे

क्योंकि वह एक स्त्री है!

(2)

सबके हित के लिए ...

वह जगह खोजो
ऐसी जगह बनाओ

जहां जाकर

कुछ देर के लिए भूल जाएँ हम

दलित उत्पीड़न को

छल-कपट के व्यवहार को

अन्याय, अत्याचार, बलात्कार

हिंसा- आगजनी की घटनाओं को।

कौन देगा भरोसा

जिंदा रहने के लिए

जिसमें विश्वास हो

कि हम भी इंसान हैं

हमें भी जीने का अधिकार है

समता, स्वतंत्रता और सम्मान का अधिकार।

कहाँ है वह जगह

जहां निर्दोष अछूतों को

शोषण से बचाया जाए

कहाँ है वह जगह

जहां सबके हित के लिए

बचा है

मानव धर्म।

(3)

तेरे अन्याय से तंग आकर

चुप रहकर, अन्याय सहकर

जलती रही नारी,

सती के नाम पर, अब तक तेरे साथ।

अब वह इस तरह

नहीं जाएगी तेरे साथ स्वर्ग

रहेगी इसी धरती पर

तेरे बिना पाएगी अधिक सुख और संतोष।

अपना जीवन अपनी पसंद से जियेगी

नहीं मिलेगी वह तुझसे

सात जन्मों की झूठी कथाओं के विरुद्ध

वह नारी मुक्ति का मार्ग अपनाएगी।

अबला पर शासन किया तुमने

उसके जीवन-मृत्यु पर अधिकार

तेरे अन्याय से तंग आकर

खोज रही है अब यह सबला

अपना अस्तित्व

अपना अधिकार।

(4)

सूरज तुम आना

सूरज,

तुम आना इस देश

अंधकार फैला है सदियों से

विषमता, धर्मांधता, अंधविश्वास है सब ओर

धधक रही है आग शोषण की

आतंक फैला रही

भेदभाव की आँच।

ये हिंसक जातिवादी

पनपने नहीं देते भाईचारा

सड़ी-गली मानसिकता के दलाल

बंजर जमीन से भी बदतर हैं इनके विचार

सूरज तुम आना

हर गाँव, हर शहर में

अपनी ऊर्जा से, ताप से

बदल देना बीमार मानसिकता

परिवर्तन के प्रकाश से।

(**परिचय :** लेखिका चर्चित कथाकार एवं कवयित्री हैं। वर्तमान में सुशीला टाकभौरे नागपुर, महाराष्ट्र में रहती हैं।

संपर्क: 9588442591)